P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May (Part-1)- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

क्रांतिकारी सुभाष चन्द्र बोस

सीमा पान्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा,
इतिहास विभाग,
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर (छ.ग.) भारत

सारांश

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस एक महान क्रांतिवीर थे, उनका एक मात्र ध्येय भारत की स्वतंत्रता था। 1921 के उत्तरार्ध में इंग्लैण्ड से भारत लौटने के बाद वे दास के प्रभाव से असहयोग आन्दोलन में सम्मिलित हुए एवं उन्होनें नेशनल एजुकेशन कॉलेज में भी काम किया और प्रिंस ऑफ वेल्स की यात्रा के विरूद्ध होने वाली हड़ताल में भी सहयोग किया।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 1925 से 1927 तक वे ब्रम्ह (बरमा) में नजरबंद रहे। कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में वे अध्यक्ष निर्वाचित हुए, किन्तु अध्यक्ष पद से त्याग पत्र देकर कांग्रेस के वाममार्गी साथियों के साथ जून 1939 में उन्होंने ''फारवर्ड ब्लॉक'' की स्थाना की।

1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान भारत रक्षा कानून के अंतर्गत बंगाल सरकार के आदेश पर उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया किन्तु 28 मार्च 1941 को वे बर्लिन पहुंचने में सफल हुये। बर्लिन में उन्होंने स्वतंत्र भारत केन्द्र की स्थापना की तथा इसी समय सैनिक दल के सदस्यों ने सुभाष को ''नेताजी'' के नाम से संबोधित किया।

4 जुलाई 1943 को सिंगापुर में नेताजी सुभाषचंद्र बोस क्रांतिकारी रास बिहारी बोस से पूर्व एशिया में चलाये जा रहे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व ग्रहण किया तथा ''चलो दिल्ली'' का नारा दिया। 21 अक्टूबर 1943 के दिन नेताजी ने आजाद हिंद की अस्थायी सरकार की विधिवत घोषणा की। 28 अक्टूबर 1943 को आजाद हिंद सरकार ने अंडमान निकोबाद द्वीपों की स्वतंत्रता घोषित कर इनका नाम शहीद एवं स्वराज द्वीप रखा। 4 अगस्त 1944 को रंगून रेडियो से प्रसारण में नेताजी ने महत्मा गांधी को ''राष्ट्रपिता'' सम्बोधित किया और आजादी के युद्ध में सफलता के लिये आशीर्वाद मांगा। 18 अगस्त 1945 को फारमोसा द्वीप में वायुयान के टकरा जाने के कारण सुभाष चंद्र बोस की मृत्यु हो गई।

नेताजी की सबसे बड़ी इच्छा थी कि देश अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त हो जाय। स्वतंत्रता के समय सुभाषचन्द्र बोस भले ही जीवित नहीं थे, किन्तु आजाद हिंद फौज के रूप में संगठित की गयी उनकी ''मानस सेना'' की एक टुकड़ी लाल किले के स्वतत्रंता की पावन बेला पर उपस्थित हुई मानो आजाद हिंद फौज के प्रत्येक जवान के रूप में नेताजी बिम्बित हो रहे हों। नेताजी आजादी के लिये अंतिम सांस तक लड़ते रहे। 'राष्ट्रोत्थान' के विषय में नेताजी का विचार था ''केवल त्याग और कष्ट सहने की धरती पर ही राष्ट्र के उत्थान की नींव डाली जा सकती है।

मुख्य शब्द : कांतिवीर, स्वदेशी, ओजस्वी. प्रतिध्वनि, सर्वोपरि, मिथ्या, गांधीवादी, फासिज्म, साम्यवाद।

प्रस्तावना

नेताजी, क्रांतिवीर थे, उनका एक ही ध्येय था भारत की स्वतंत्रता। वे एक राजनेता, कूटनीतिज्ञ के साथ स्पष्ट वक्ता भी थे। वे कहते थे – 'मैं गुलामी के घी से आजादी की घास खाना अच्छा समझता हूँ।' बोस 1921 के उत्तरार्ध में इंग्लैण्ड से भारत लौटे। गाँधी जी ने उन्हें बंगाल के महान क्रांतिकारी सी.आर. दास से भेंट करने की सलाह दी।[1] कलकत्ता आने के बाद बोस दास से मिले और जल्दी ही बंगाल में असहयोग आंदोलन के दौरान कई महत्वपूर्ण कार्य किये। बोस ने नेशनल एजुकेशन कॉलेज में काम किया और प्रिंस ऑफ वेल्स की यात्रा के विरूद्ध होने वाली हड़ताल में सहयोग किया। दो सालों के बाद ही 'फारवर्ड' में वह सलाहकारी संपादक बने और कलकत्ता कारपोरेशन के मुख्य शासन संबंधी अधिकारी बने।[2] बंगाल की सरकार ने 1923 के अंत में उन्हें क्रांतिकारियों से संबंध होने के प्रमाण होने पर गिरफ्तार कर लिया गया।[3] इन लोगों ने एक अध्यादेश के अंतर्गत उन्हें नजरबंद किया गया था, जो युद्धकालीन भारत रक्षा नियमों के समान था और जिसे बाद में कानून बना दिया गया था।[4]

समाजवादी और कम्युनिस्ट विचारों ने बंगाल के राजनीतिक कार्यकर्ताओं पर बड़ा गहरा प्रभाव डाला और कई नामी वामपंथी दलों ने अपने कार्यकारी प्रयासों को कलकत्ता और अन्य औद्योगिक केन्द्रों में केन्द्रित करना शुरू कर दिया।[5] देशबन्धु के प्रयत्नों से ही उनके दल ने कलकत्ता निगम का चुनाव जीत लिया, सुभाष को, प्रमुख कार्यपालक अधिकारी बनाया गया।[6] 1925 से 1927 तक वे ब्रम्ह (बरमा) में नजरबंद रहे। 1927 के बाद जेल से रिहा होने के पश्चात् सुभाष बोस ने ऐसी ही तलाश को अभिव्यक्ति दी, जिसे कांग्रेस ने हिन्दुस्तानी सेवा दल के माध्यम से युवकों को संगठित करने का प्रयास किया था। इसका आरंभ 1920 के दशक के मध्य में एन.जी.हर्डीकर ने कर्नाटक में किया था। 1928–29 के दौरान जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चन्द्र बोस देश के अनेक भागों में युवकों की सभाओं को संबोधित करते रहे।[9]

1927 मद्रास कांग्रेस में सुभाष चन्द्र बोस और जवाहर लाल नेहरू को कांग्रेस का महामंत्री बनाया गया। इस अधिवेशन में भारत के लिये एक नया विधान बनाने का कार्य सर तेज बहादुर सप्रू, सुभाषचंद्र बोस, जी.आर. प्रधान, सैयद कुरैशी, सर अली इमाम व श्री अणे को सौंपा गया था। जब नेहरू रिपोर्ट में डोमिनियम स्टेट्स का लक्ष्य स्वीकार किया गया तो जवाहर लाल और सुभाष ने पूर्ण स्वाधीनता के लक्ष्यों को स्वीकार करवाने के लिये कांग्रेस के भीतर ही एक दबाव समूह के रूप में ''इंडिपेंडेस फॉर इंडिया लीग'' की स्थाना की।[10] सुभाषचंद्र बोस तथा श्री निवास आयंगर ने 1929 की लाहौर कांग्रेस के अवसर पर कांग्रेस डेमोक्रेटिक पार्टी की स्थापना की थी।[11]

1928 में मजदूर आंदोलन की गति तेज हो गयी। कम्प्यूनिस्ट नेतृत्ववाली मजदूर किसान पार्टी के कार्यकर्ताओं ने 1928 में कलकत्ता नगर निगम के सफाई कर्मचारियों की हड़ताल में चेंगैल एवं बावरिया की जूट मिलों में होने वाली हड़तालों में प्रमुख भूमिका निभायी थी। बावरिया के हड़ताली कामगारों के लिये धनराशि जुटाने की प्रार्थना जवाहरलाल के द्वारा ही सुभाष बोस तक पहुंचायी जा सकी।[12] जमशेदपुर के टाटा आयरन एण्ड स्टील वर्क्स की हड़ताल (1928) सुभाष चन्द्र बोस के हस्तक्षेप से समाप्त हुई थी।[13] अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने 1929 में बाकर अली मिर्जा की देखरेख में एक श्रमिक अनुसंधान विभाग की स्थापना की।[14] सुभाष ''भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस''के अध्यक्ष भी बनाये गये। इस माध्यम से उन्होंने मजदूरों की अनेक सभाओं को भी संबोधित किया।

सन् 1930 में (33 वर्ष की आयु) सुभाष चन्द्र बोस कलकत्ता नगर निगम के महापौर निर्वाचित हुये। 26 जनवरी 1931 को स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में कलकत्ता के आक्टर लोनी स्मारक में सुभाष ने एक बड़े जनसमूह का नेतृत्व किया। पुलिस के लाठी चालन से वे घायल हुये, उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेजा गया, बार–बार जेल यात्राओं के फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य गिरता गया।[15] सुभाष चन्द्र बोस अपने बड़े भाई शरतचन्द्र बोस के साथ सिवनी (मध्यप्रांत) लाए गए, तब उनके साथ मध्यप्रांत के प्रमुख कांग्रेसी नेता द्वारका प्रसाद मिश्र की मुलाकात हुई। इस मुलाकात के विषय में उन्होंने लिखा है कि सुभाष बाबू बीमार थे और उनके अभिवादन के लिये वे चारपाई से उठ बैठे। इस पहली भेंट में उनका स्वास्थ्य और उनका जेल जीवन ही प्रमुख विषय रहा। बाद में कई मुलाकातें हुईं और राजनीतिक कार्यक्रमों पर चर्चा होने लगी। शीघ्र ही वे समझ गये कि वे अधिक व्यक्तियों को अपनी विचारधारा के अनुकूल करने का प्रयास कर रहे थे।[16]

श्री मिश्र ने अपने साक्षात्कार में बताया था कि 'सुभाष के जीवन का दार्शनिक पक्ष मेरे हृदय में भी प्रतिध्वनित था। सुभाष के कालेज अध्ययन में दर्शन शास्त्र एक विषय था, लेकिन जब मैंने उस पर चर्चा करनी चाही तो उस ओर उनका विशेष उत्साह परिलक्षित नहीं हुआ। पूजा और प्रार्थना के बाद उनका सारा ध्यान विदेशी शासन से स्वदेशी मुक्ति पर केन्द्रित था। हमारा मतभेद स्वाधीनता के संघर्ष में हिंसा के स्थान के संबंध में था। मैं उनके इस विचार से सहमत नहीं था। किसी भी कीमत पर अपने देश को मुक्त करने की व्यग्रता, उनकी निःस्वार्थ भावना, लगन और तपनिष्ठा ने मुझे बहुत प्रभावित किया। हम दोनों को इतने निकट करने में एन.सील का बड़ा योगदान रहा। सिवनी के निवासी होने के कारण सील ने सुभाष बाबू के बंगाल के अपने विश्वास पात्र व्यक्तियों से गुप्त पत्राचार का प्रबंध कर दिया था।'[17]

1937 का चुनाव जवाहर लाल नेहरू के तूफानी दौर और सरदार पटेल की संगठन क्षमता की विजय का सूचक था।'[18]अखिल भारतीय स्तर पर इस चुनाव में 11 में से 6 प्रांतों में कांग्रेस को स्पष्ट बहुमत मिला, इसके अतिरिक्त 3 प्रांतों में कांग्रेस को सबसे बड़े दल बनने का गौरव प्राप्त हुआ, जिन प्रांतों में कांग्रेस का बहुमत था स्वाभाविक था कि गर्वनर वहां कांग्रेस की सरकार बनाने का निमंत्रण देते। परन्तु सरकार बनाने के पक्ष विपक्ष में कांग्रेस में मतभेद थे। सरकार बनाने के पक्ष में राज गोपालाचारी डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और सरदार वल्लभ भाई पटेल तथा जो पक्ष में नहीं थे, उनमें जवाहर लाल नेहरू व सुभाषचंद्र बोस थे। अंत में गाँधी जी की मध्यस्थता से समझौता हो सका, परन्तु गवर्नरों के अडंगे के कारण मंत्रिमण्डल का गठन नहीं हो सका।[19]

कांग्रेस का 51वाँ अधिवेशन हरिपुरा में 19 से 21 फरवरी 1938 तक सुभाषचंद्र बोस की अध्यक्षता में हुआ। इसमें नये विधान के अनुसार चुनाव, मंत्रिमण्डल का पद ग्रहण तथा उनके कार्यक्रम का क्रियात्मक स्वरूप और इस परिप्रेक्ष्य में किसान व मजदूर आन्दोलनों के स्वरूप का अध्ययन था। किसान देश के तीन चौथाई भाग थे, अतः कांग्रेस ने उनको समर्थन देना स्वीकार किया। किसान स्वयं संगठन के माध्यम से आन्दोलन करना अपेक्षित समझता था। इस अधिवेशन ने प्रांतीय कांग्रेस समितियों को इस संदर्भ में उपर्युक्त कार्य करने की स्वीकृति दी।[20]

बोस को सी.आर.दास की तरह मुस्लिम वर्ग का व्यापक समर्थन नहीं मिला। बोस को बढ़ती जातिगत शक्तियों ने भी क्षुब्ध किया। 1935 का भारतीय संवैधानिक अधिनियम जब लागू हुआ, तब उनके समूह ने फजल हक की पार्टी से गठजोड़ किया था।[21] वंदेमातरम् गान को

भारत के राष्ट्रगान के रूप में किस तरह शामिल किया जाए, इस विषय में एक्जीक्यूटिव कौंसिल बंगाल प्रार्विंस कांग्रेस कमेटी की ओर से बोस को अधिकृत किया गया था। बोस का विचार था कि हिन्दू मुस्लिम एकता के साथ आर्थिक प्रश्न महत्वपूर्ण हैं। जातिवादी मुस्लिम इस तरह के विवादास्पद प्रश्न उठाते रहे हैं। वंदे मातरम् सभाओं में गाया जाता था, तथा कांग्रेस की विजय सिद्ध करता था, संभवतः इसीलिये इतना महत्वपूर्ण हो गया था।[22] बोस ने जवाहरलाल नेहरू को पत्र लिखा कि बंगाल की 80 प्रतिशत जनता 'वंदे मातरम्' के प्रथम दो अंतरों को राष्ट्रगान के रूप में देखना चाहती है, जबकि साहित्यकार आदि उसे पूरा रखना चाहते हैं। यदि सही दिशा में प्रयास किया जाये, तो राष्ट्रवादी मुसलमान भी साथ देंगें।[23] 1938 में सुभाषचंद्र बोस ने भरसक प्रयास किया कि जिन्ना से सुलह हो सके और सारा राष्ट्र एक हो जाए। उन्होनें स्पष्ट किया कि वह मुसलमानों के हितों के प्रति उसी प्रकार सजग और सावधान हैं, जिस तरह दूसरों के। कांग्रेस हिन्दुओं का नहीं, सारे देश का विचार मंच है। उन्होंने भारतीय एकता को सर्वोपरि स्थान दिया।[24] परन्तु जब कांग्रेस अपनी मंत्रिमण्डल में लीग के व्यक्तियों को सम्मिलित करने के लिये तैयार नहीं हुई, तब जिन्ना ने कांग्रेस मंत्रिमण्डल पर मुसलमानों पर घोर अत्याचार करने का मिथ्या आरोप लगाया।[25]

सुभाष कांग्रेस में उत्पन्न हुये विरोध के कारण अध्यक्ष बनने के बाद भी अपनी कार्य समिति नहीं बना पाये। उन्हें महसूस हुआ कि देश को स्वतंत्र कराने के लिये कांग्रेस के साथ काम करने में उन्हें काफी समय लग सकता है। अतः अध्यक्ष पद से त्याग पत्र देकर कांग्रेस के वाममार्गी साथियों के साथ जून 1939 में उन्होंने ''फारवर्ड ब्लॉक'' की स्थापना की।''[26]

'फारवर्ड ब्लॉक' के बारे में सुभाष ने कहा था कि 'फारवर्ड ब्लाक' गाँधी के व्यक्तित्व और अहिंसात्मक असहयोग के उनके सिद्धान्त को पूरा सम्मान देती है लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि कांग्रेस के मौजूदा हाई कमान में भी अपनी निष्ठा बनाए रखें।''[27]सुभाषचंद्र बोस के इस्तीफा देने से कांग्रेस के दोनों घटक आमने सामने आ गये थे।''[28]1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हो चुका था। अंग्रेजों की दृष्टि में भारतीयों के असहयोग का कारण सुभाष ही थे। यूरोपियन अधिकारियों के लिये वे बेट नॉऊ बन गये थे।''[29]अधिकारियों का ऐसा विश्वास था कि उन्होंने क्रांतिकारी दल से एक लीग बनाई है और वे एक नेता जिसके पास बड़ी संख्या में क्रांतिकारी सहयोग हो गाँधी या गाँधीवादियों से अधिक खतरनाक है।

30 जुलाई 1939 को हालवेल स्मारक के संबंध में सुभाष व्यक्तिगत सत्याग्रह करने वाले थे, परन्तु भारत रक्षा कानून के अंतर्गत बंगाल सरकार के आदेश पर उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। जेल में रहते हुये सुभाष ने देश के बाहर जाकर देश को सवतंत्रता दिलाने की व्यापक रूपरेखा तैयार कर ली थी। अनेक कठिनाईयों को पार करते हुये 28 मार्च 1941 को वे बर्लिन पहुंचने में सफल हुये।[30] इसके पूर्व नेताजी 1932 से 1936 तक यूरोप में रहे थे। उस समय उन्होंने हिटलर, मुसोलिनी जैसे नेताओं से तथा प्रसिद्ध दार्शनिक टोक्या रोलों से भी मुलाकात की थी।[31]

बर्लिन में उन्होंने स्वतंत्र भारत केन्द्र की स्थापना की जो एक अर्द्ध–राजनैतिक संस्था के रूप में कार्य करती थी। इसी समय सैनिक दल के सदस्य सुभाष को ''नेताजी'' के नाम से संबोधित करने लगे थे। अक्टूबर 1941 से आजाद हिंद रेडियो का प्रसारण कार्य आरंभ हो गया था। उनका राष्ट्रध्वज कांग्रेस का तिरंगा झंडा था। कैप्टन मोहन सिंह ने पहले ही जापान के जत्रा नामक स्थान पर आजाद हिंद फौज की स्थापना की थी। पूर्वी एशिया के लिये भारत को आजादी दिलाने के लिये प्रमुख क्रांतिकारियों ने आजाद हिंद फौज के माध्यम से 15 जून 1942 को बैंकाक में एक सम्मेलन का वृहत् आयोजन किया। पहले आजाद हिंद फौज का मुख्यालय सिंगापुर में था, बाद में इसे रंगून स्थानांतरित कर दिया गया।

3 जून 1943 को क्रांतिकारी रास बिहारी बोस से नेताजी की मुलाकात हुई। रास बिहारी बोस ने 1911 में लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने के पश्चात् 30 वर्षों से जापान में वहीं के देशभक्त तोयामा के संरक्षण में निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहे थे। रास बिहारी बोस ने पूर्वी एशिया में रहने वाले भारतीयों को संगठित कराकर अंग्रेजों के विरूद्ध लड़ने के लिये जापान में आजाद हिन्द संघ की स्थापना की थी।

4 जुलाई 1943 को सिंगापुर में नेताजी सुभाषचंद्र बोस क्रांतिकारी रास बिहारी बोस से पूर्व एशिया में चलाये जा रहे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व ग्रहण किया। 5 जुलाई को नेताजी ने ''चलो दिल्ली'' का नारा दिया, अब तक आजाद हिन्द फौज हिन्दुस्तान को स्वतंत्र करने वाली सेना बन चुकी थी। 21 अक्टूबर 1943 के दिन नेताजी ने आजाद हिंद की अस्थायी सरकार की विधिवत घोषणा की। आजाद हिंद सरकार की स्थापना के तुरन्त बाद सुभाषचन्द्र बोस ने सिंगापुर में झांसी की रानी रेजीमेंट का गठन किया। कैप्टन डॉ. लक्ष्मी स्वामी नाथन को इस रेजीमेंट का संचालक नियुक्त किया गया। 28 अक्टूबर 1943 को आजाद हिंद सरकार की प्रथम उपलब्धि अंडमान निकोबार द्वीपों की स्वतंत्रता थी। आजाद हिंद सरकार ने इन द्वीपों का नाम शहीद एवं स्वराज द्वीप रखा। 5 अप्रैल 1944 को रंगून में आजाद हिंद सरकार के राष्ट्रीय बैंक की स्थापना कर वहीं पर उसकी प्रथम शाखा खोली। इस सरकार ने अपने स्वतंत्र नोट तथा डाक टिकट भी छपवाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। 4 अगस्त 1944 को रंगून रेडियो से प्रसारण में नेताजी ने महात्मा गांधी को ''राष्ट्रपिता'' सम्बोधित किया और आजादी के युद्ध में सफलता के लिये आशीर्वाद मांगा। 18 अगस्त 1945 को फारमोसा द्वीप में वायुयान के टकरा जाने के कारण सुभाष चंद्र बोस की मृत्यु हो गई।[32]

नेताजी की सबसे बड़ी इच्छा थी कि देश अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त हो जाय। स्वतंत्रता के समय सुभाषचन्द्र बोस भले ही जीवित नहीं थे, किन्तु आजाद हिंद फौज के रूप में संगठित की गयी उनकी ''मानस सेना'' की एक टुकड़ी लाल किले के स्वतत्रंता की पावन बेला पर उपस्थित हुई मानो आजाद हिंद फौज के प्रत्येक जवान के रूप में नेताजी बिम्बित हो रहे हों। बोस ने अपने संघर्ष

के दिनों में हमेशा यह महसूस किया कि ब्रिटिश से लड़ने के लिये भारत को एक मजबूत, ओजस्वी, सैनिक जैसा नेता चाहिये न कि कोई दुविधापूर्व, भ्रमवाला, सुधारक गुरू।[33] मजबूत नेताओं की ओर उनकी रूचि थी जैसे हिटलर स्टेनली, मुसोलिनी एवं सर स्टेनली जैक्सन। बोस का मानना था कि एक मजबूत पार्टी, कड़ा अनुशासन और तानाशाही के नियम आज भारत की जरूरत है।[34] भारतीय संघर्ष के अंतिम दिनों में बोस ने फासिज्म एवं साम्यवाद के मिले जुले रूप का प्रस्ताव रखा एवं यह प्रतिज्ञा की, कि अपनी पूरी ऊर्जा देश को सही नेतृत्व प्रदान करने में लगायेंगे।[35]

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की भारतीय स्वतंत्रता संग्राम संघर्ष में भूमिका को सामने लाना है। वे भारत की आजादी के लिये अंतिम सांस तक लड़ते रहे। 'राष्ट्रोत्थान' के विषय में नेताजी का विचार था ''केवल त्याग और कष्ट सहने की धरती पर ही राष्ट्र के उत्थान की नींव डाली जा सकती है।'' अतः नेताजी के स्वतंत्रता संघर्ष एवं वैचारिक आयामों का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

नेताजी आजादी के लिये अंतिम सांस तक लड़ते रहे। उनका सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र को समर्पित रहा। उनके विचार में राष्ट्र प्रथम था। 'राष्ट्रोत्थान' के विषय में नेताजी का विचार था ''केवल त्याग और कष्ट सहने की धरती पर ही राष्ट्र के उत्थान की नींव डाली जा सकती है।''

अंत टिप्पणी

1. *बोस–इंडियन स्ट्रगल, पृष्ठ 80–81*
2. *दास गुप्ता–सुभाष चन्द्र, पृष्ठ 37–73*
3. *लियोनार्ड ए गार्डन–बंगाल द नेशनलिस्ट मूवमेन्ट 1876–1940, पृष्ठ 233*
4. *सुमित सरकार–जनराष्ट्रवाद–उद्भव एवं समस्यायें 1917–1927, पृष्ठ 253*
5. *लियोनार्ड ए गार्डन–बंगाल द नेषनलिस्ट मूवमेंन्ट 1976–1940, पृष्ठ 223*
6. *ओम प्रकाश शिव–खनन भारती दिसंबर 1996–नेताजी सुभाष और आजाद हिंद फौज, पृष्ठ 24*
7. *लियोनार्ड ए गार्डन – पूर्वोक्त*
8. *जवाहर लाल नेहरू–एन आटो बायोग्राफी, पृष्ठ 173*
9. *सुमित सरकार–आधुनिक भारत, पृष्ठ 272–287*
10. *पट्टाभि सीता रमैया–हिस्ट्री ऑफ द इंडिया नेशनल कांग्रेस, जिल्द–1, पृष्ठ 333*
11. *जवाहर लाल नेहरू–एन आटो बायोग्राफी, पृष्ठ 197*
12. *सुभाष बोस को नेहरू का पत्र, 24 जनवरी 1929 सेलेक्टेड वर्क्स, खण्ड–4*
13. *राजेन्द्र मोहन भटनागर, भारतीय कांग्रेस का इतिहास, पृष्ठ 202*
14. *सुमित सरकार–आधुनिक भारत, पृष्ठ 293*
15. *खनन भारती, दिसंबर 1996, पृष्ठ 26*
16. *डी.पी.मिश्र–लिविंग एन इरा खंड 1, पृष्ठ 209*
17. *डॉ. प्रदीप शुक्ल का श्री डी.पी.मिश्र से साक्षात्कार दिनांक 02/01/1988*
18. *डॉ.ओम नागपाल–भारत का राष्ट्रीय आंदोलन और संवैधानिक विकास, पृष्ठ 1488*
19. *डॉ.उमाशंकर शुक्ल–म.प्र. (सी.पी.बरार) की राजनीति में डॉ.ई.राघवेन्द्रराव का योगदान, पृष्ठ 178*
20. *जे.पी.शर्मा–म.प्र. में राष्ट्रीय आन्दोलन, पृष्ठ 147*
21. *लियोनार्ड ए गार्डन–बंगाल द नेशनलस्टि मूवमेंट 1976–1940, पृष्ठ 224*
22. *सुभाष बोस का नेहरू को पत्र, ए.आई.सी.सी. पेपर्स एफ.नं.पी. 5/1937, 17 अक्टूबर 1937*
23. *नेहरू पेपर्स–13/12/1937*
24. *पट्टाभि सीता रमैया–द हिस्ट्री ऑफ द इंडियन नेशनल कांग्रेस (खंड 2) पृष्ठ 74*
25. *राजेन्द्र मोहन भट्नागर–भारतीय कांग्रेस का इतिहास, पृष्ठ 240*
26. *डॉ. वी. पट्टाभिसीतारमैया–कांग्रेस का संक्षिप्त इहिास पृष्ठ 334*
27. *एस.एस.अय्यर–सिलेक्टेड स्पीचेस ऑफ सुभाष चंद्र बोस, पृष्ठ 95*
28. *राजेन्द्र मोहन भटनागर–भारतीय कांग्रेस का इतिहास, पृष्ठ 242*
29. *लियोनार्ड ए गार्डन–बंगाल द नेशनलिस्ट मूवमेंट 1876–1940 पृष्ठ 224*
30. *खनन भारती– दिसम्बर 1996, पृष्ठ 28*
31. *विभा देवरसे–आजादी की कहानी, पृष्ठ 82*
32. *खनन भारती, दिसम्बर 1996, पृष्ठ 32–42*
33. *बोस–इंडियन स्ट्रगल, पृष्ठ 105, 160, 350, 409*
34. *बोस–इंडियन स्ट्रगल, पृष्ठ 428–429*
35. *बोस–इंडियन स्ट्रगल, पृष्ठ 430–431*